ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P) ICV (Index
IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Arts

पं. रविशंकर शुक्ल का राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान

डॉ प्रदीप शुक्ला प्रोफेसर [1]
[*1] इतिहास विभाग गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर।

DOI: 10.29121/granthaalayah.v5.i2.2017.6311

सारांश

ऐसा इंसान बिरला ही पैदा होता है जो व्यक्ति के अनेक गुणों को एक साथ अपने में लिए रहता है। पुराने मध्यप्रांत और नये मध्यप्रांत के जन-जन के नेता स्व. पं. रविशंकर शुक्ल एक ऐसे ही बिरले इंसान थे। आजादी की लड़ाई में जहां से अपने उसूलों के पक्के और दृढ़ प्रतिज्ञ व कठोर सैनिक की तरह लड़ते रहे वहीं अपने प्रदेश की पिछड़ी हुई गरीब जनता को देख उनके दिल में गहरी दया, प्रेम और सहानुभूति की भावना उमड़ पड़ी। आजादी के बाद प्रशासकीय क्षेत्र में आते ही वे अपनी प्यारी जनता की सेवा में लग गये और जीवन के अंतिम श्वांस तक यही करते रहे।

मुख्य शब्द: *पं. रविशंकर शुक्ल का, राष्ट्रीय आन्दोलन, योगदान।*

Cite This Article: डॉ प्रदीप शुक्ला प्रोफेसर. (2017). "पं. रविशंकर शुक्ल का राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 5(2), 369-371. 10.29121/granthaalayah.v5.i2.2017.6311.

1. भूमिका

ऐसा इंसान बिरला ही पैदा होता है जो व्यक्ति के अनेक गुणों को एक साथ अपने में लिए रहता है। पुराने मध्यप्रांत और नये मध्यप्रांत के जन-जन के नेता स्व. पं. रविशंकर शुक्ल एक ऐसे ही बिरले इंसान थे। आजादी की लड़ाई में जहां से अपने उसूलों के पक्के और दृढ़ प्रतिज्ञ व कठोर सैनिक की तरह लड़ते रहे वहीं अपने प्रदेश की पिछड़ी हुई गरीब जनता को देख उनके दिल में गहरी दया, प्रेम और सहानुभूति की भावना उमड़ पड़ी। आजादी के बाद प्रशासकीय क्षेत्र में आते ही वे अपनी प्यारी जनता की सेवा में लग गये और जीवन के अंतिम श्वांस तक यही करते रहे।

पं. रविशंकर शुक्ल का जन्म 2 अगस्त 1877 को सागर में जगन्नाथ शुक्ल के यहां हुआ। आपकी शिक्षा रायपुर, हिस्लाप कॉलेज नागपुर, विधि जबलपुर में हुई। 1901 में आप जबलपुर के हितकारिणी उच्च विद्यालय के सहायक शिक्षक के पद पर काम करने के बाद खैरागढ़ रियासत के विद्यालय में अपने प्रधानाध्यापक के पद पर सफलतापूर्वक कार्य किया। इसके अतिरिक्त बस्तर कवर्धा, खैरागढ़ नरेशों के आप निजी शिक्षक रहे। 1907 में आपने राजनांदगांव में वकालत प्रारंभ की, तत्पश्चात 1909 में रायपुर में वकालत आरंभ किया। आपने रायपुर में कान्यकुब्ज सभा का निर्माण किया और यहीं से आपने राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया। 1937 के निर्वाचन में आप विधानसमा के सदस्य चुने गये और खरे मंत्रिमंडल में आप शिक्षा मंत्री नियुक्त किये गये। इसके पश्चात आपके नेतृत्व में 1946 में पुनः मंत्रिमंडल ने पदग्रहण किया। सागर वि.वि. के कुलपत्ति के पद पर भी आप रहे। शुक्ल जी की मृत्यु त्तन् 1956 में हुई।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P) ICV (Index
IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

स्वतंत्रता संग्राम आदोलन में योगदान रू. म०प्र० में दूसरे प्रांतों की अपेक्षा इस शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में राजनीतिक प्रगति पर्याप्त मंद रही है। पं. शुक्ल ने जिस समय राजनीति के क्षेत्र में सकिय पदार्पण किया, कांग्रेस नरम व गरम दलों में विभाजित थी। श्री शुक्ल कांग्रेस की गरम विचारधारा को मानने वाले थे। प्रारंभ से श्री लोकमान्य तिलक की विचारधारा के समर्थक थे। सांस्कृतिक दृष्टि से शुक्ल जी का एनी बिसेन्ट की विचारधारा से भी बड़े प्रभावित थे। इस पर भी जहां तक राजनीति का संबंध था वे एनी बेसेन्ट की होमरूल लीग के सदस्य नहीं थे और जब लखनऊ कांग्रेस के पूर्व बेलगाव में 1916 में लोकमान्य तिलक ने होमरूल लीग की स्थापना की ती शुक्ल जी उसकी रायपुर शाखा के एक प्रमुख संगठनकर्ता बन गये। प्रारंभ में यद्यपि शुक्ल जी कांग्रेस के अधिवेशनों में जाते रहे तथापि इसके नियमित सदस्य नहीं थे। सन् 1915 के अधिवेशन के अवसर पर शुक्ल जी को महात्मा गांधी को निकट से देखने सुनने का अवसर प्राप्त हुआ और उनके विचारों तथा रहन-सहन का शुक्ल जी पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा।

शुक्ल जी के राजनीति में प्रवेश का प्रारंभिक काल असहयोग आंदोलन का काल था। महात्मा गांधी ने ब्रिटिश नीति के विरुद्ध असहयोग आंदोलन प्रारंभ किया। सत्याग्रह आंदोलन ने देश भर में एक अपूर्व कांति का वातावरण प्रस्तुत कर दिया। श्री शुक्ल जी इस समय से अपना पूर्ण समय सामाजिक जातीय एवं सांस्कृतिक कार्यों में लगाते थे, पर गांधी के इस आंधी में उनका कायाकल्प हो गया। देश की राजनीतिक परिस्थिति पर विचार करने के लिए सन 1919 में लाला लाजपतराय की अध्यक्षता में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन कलकत्ता में हुआ। इस अधिवेशन में शुक्ल जी भी शामिल हुए। उन्हें म.प्र. की ओर से कांग्रेस के अगले अधिवेशन में भी भाग लेने के लिए निमंत्रण दिया गया। नागपुर के विशेष अधिवेशन में उन्होंने भाग लिया।

कलकत्ता तथा नागपुर कांग्रेस से नव संदेश लेकर शुक्ल जी ने अपने जिले तथा प्रांत की सक्रिय राजनीति में भाग लेना प्रारंभ किया। 1921 में आप कांग्रेस के नियमित सदस्य बन गये और अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति के सदस्य चुने गये। 1921 में नवीन विधान के अनुसार रायपुर में कांग्रेस का प्रथम चुनाव हुआ। शुक्ल जी कांग्रेस के मंत्री थे। 1922 में रायपुर में रायपुर जिला राजनीतिक परिषद का आयोजन किया गया। इस अवसर पर परिषद में प्रवेश के मामले को लेकर अग्रेज सरकार ने पं. शुक्ल को गिरफ्तार कर लिया तथा उन्हें दो दिन तक जेल में रखा। शुक्ल जी के इस गिरफ्तारी का रायपुर और प्रांत की जनता पर गहरा प्रभाव पड़ा और 16 सिपाहियों ने त्यागपत्र दे दिया।

सन् 1922 के दिसंबर माह में गया में देशबंधु चितरंजनदास की अध्यक्षता में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ तथा कांग्रेस के अन्तर्गत ही 'स्वराज्य पार्टी' नामक संस्था ने जन्म लिया। महाकौशल में इस नवीन दल का संगठन कार्य एवं नेतृत्व सेठ गोविंद दास, बैरिस्टर राघवेंद्र राव व पं. गुक्ल कर रहे थे। बाद में कांग्रेस ने एक घोषणा पत्र द्वारा कौंसिल प्रवेश का समर्थन किया। इस घोषणापत्र पर हस्ताक्षर करने वालों में पं. शुक्ल भी शामिल थे। श्री शुक्ल ने म.प्र. में स्वराज्य पार्टी के संगठन को सुदृढ़ करने में प्रमुख भूमिका निभाई। 1924 में प्रांतीय व्यवस्थापिका सभा के चुनाव हुए और शुक्ल भी स्वराज्य पार्टी की ओर से व्यवस्थापिका सभा के सदस्य चुने गये।

सन् 1921 से ही पं. शुक्ल रायपुर जिला कौंसिल के सदस्य चुन लिये गये। इन संस्थाओं के द्वारा वे शिक्षा प्रसार एवं राष्ट्रीय जागरण के कार्य को पूरा करना चाहते थे। शुक्ल जी रायपुर जिला कौंसिल के अध्यक्ष पद पर जेल यात्रा के दिनों को छोड़कर 1927 से 1937 तक लगातार कार्य करते रहे। 1927 से 1937 तक के कार्यकाल में जिला कौंसिल ने अनेक उल्लेखनीय कार्य किये जिनसे जिले में राष्ट्रीय जागरण एवं स्वतंत्रता संग्राम के लिये वातावरण उत्पन्न हुआ। इसके लिए कौंसिल के समस्त कार्यवाही का ब्यौरा हिन्दी में रखवाना प्रारंभ किया। कौंसिल ने यह नियम बनाया कि विद्यालयों में प्रतिदिन आध्ययन एवं विशिष्ट कार्यक्रमों के अवसर पर प्रारंभ में हमेशा झंडा वदन तथा 'वंदेमातरम् गायन अवश्य किया जाय। जिला कौंसिल के अध्यक्ष के रूप में शुक्ल जी ने समस्त अधीनस्थ विद्यालयों के शिक्षकों को राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने का आदेश दिया था। कांग्रेस द्वारा पूर्ण स्वतंत्रता राष्ट्रीय लक्ष्य घोषित करने पर शुक्ल जी के नेतृत्व में रायपुर कौंसिल ने समस्त विद्यालयों को 26 जन. 1930 को राष्ट्रीय दिवस समारोह पूर्वक मनाने का आदेश दिया। विद्यालयों में राष्ट्रीय नेताओं चित्र लगवाये गये। इस प्रकार शिक्षा प्रसार, राष्ट्रीय जागरण आदि क्षेत्रों में रायपुर जिला कौंसिल ने शुक्ल जी के नेतृत्व में अनेक उल्लेखनीय कार्य किये।

1930 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारंभ होने पर शुक्ल जी ने प्रांत के अन्य नेताओं के साथ प्रदेश की जनता का नेतृत्व किया, परिणामस्वरूप अन्य नेताओं के साथ वे भी सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिये गये। शुक्ल जी इस दौरान प्रारंभ में जबलपुर जेल में रखे गये, बाद में उन्हें सिवनी जेल ले जाया गया जहां अंगुलियों के छाप लेने की घटना घटित्त हुई जिसमें शुक्ल जी ने अपने अदम्य साहस दृढ़ता तथा स्वाभिमान का परिचय दिया।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P) ICV (Index
IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

प्रथम गोलमेज सम्मेलन के पश्चात् 1932 में गांधी जी ने सत्याग्रह प्रारंभ किया और गिरफ्तार कर लिये गये। इसके विरोध में प्रांत भर में आंदोलन हुए। पं. शुक्ल इसके डिक्टेटर नियुक्त किये गये। अप्रैल 1932 में शुक्ल जी गिरफ्तार कर लिये गये तथा उन्हें २ वर्ष का कारावास सुनाया गया। 1932 में महात्मा गांधी द्वारा प्रांत का दौरा करने पर शुक्ल जी ने मी उनके साथ 600 मील से भी अधिक का दौरा किया। इस दौरान प्रांत में राष्ट्रीय जागरण कार्य को व्यवस्थित एवं संगठित करने के लिये सन् 1935 में शुक्ल जी ने नागपुर से साप्ताहिक हिन्दी पत्र "महाकौशल का प्रकाशन प्रारंभ किया।

1936 में प्रांतीय धारा सभा का चुनाव होने पर शुक्ल जी भी निर्वाचित हुए तथा श्री नारायण भास्कर खरे मंत्रिमंडल में शिक्षा एवं कृषि मंत्री बनाये गये। इस पद पर रहते हुए शुक्ल जी ने विद्या मंदिर योजना प्रारंभ की जो महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा योजना से मिलती थी।

1938 में शुक्ल जी के नेतृत्व में प्रांतीय मंत्रिमंडल का गठन हुआ। यह मंत्रिमंडल अगस्त 1938 से नवंबर 1939 तक कार्य करता रहा। इस दौरान शुक्ल जी के निमंत्रण पर सुभाषचन्द्र बोस की अध्यक्षता में कांग्रेस का शिवपुरी अधिवेशन सम्पन्न हुआ।

1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह के दौर में पं. रविशंकर शुक्ल जी भी भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत गिरफ्तार किये गये।

1942 में भारत छोड़ आंदोलन प्रारंभ किया गया और महात्मा गांधी गिरफ्तार कर लिये गये। गांधी जी एवं अन्य नेताओं के गिरफ्तार होते ही शुक्ल जी ने मध्यप्रदेश में 'करो या मरो आंदोलन संगठित करने के लिये अपने सादियों के साथ चल पड़े और गिरफ्तार कर लिये गये। शुक्ल जी को मद्रास प्रांत के वेलोर जेल में रखा गया जहां 3 वर्ष तक बंदी रहे। उन्हें शिमला सम्मेलन में भाग लेने के लिए 13 जून 1945 को छोड़ दिया गया।

1946 के निर्वाचन में शुक्ल जी के नेतृत्व में लोकप्रिय मंत्रीमंडल ने पदभार ग्रहण किया। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के अवसर पर शुक्ल जी प्रदेश के मुख्यमंत्री थे।

वस्तुतः राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के इस क्षेत्र में सफलता का श्रेय पं. शुक्ल को जाता है। महात्मा गांधी के विचारों तथा कार्यों से प्रभावित उनका संघर्षपूर्ण जीवन निःसंदेह आने वाली पीढ़ी का पथ-प्रदर्शन करता रहेगा।